ओ३म्

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

वर्ष 8 अंक 16 | 18 से 24 अप्रैल, 2013 | दयानन्दाब्द 190 | सृष्टि सम्वत् 1960853114 | सम्वत् 2070 | चै. शु.-08

शुल्क :- एक प्रति 2 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

जात-पात को मिटाने का सबसे प्रभावी उपाय है अन्तर्जातीय विवाह

— स्वामी अग्निवेश

अन्ध विश्वास मिटाओ देशवासियों को जागृत करो

— मामचन्द रिवाड़िया

डॉ. भीमराव अम्बेडकर का 122वाँ जन्म दिवस

सार्वदिशिक सभा के सभागार में समारोह पूर्वक मनाया गया

देश के संविधान निर्माता तथा दलितों के मसीहा डॉ. भीमराव अम्बेडकर का 122वाँ जन्मदिवस 14 अप्रैल को दोपहर तीन बजे से सार्वदेशिक सभा के मुख्यालय ''दयानन्द भवन'' 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के विशाल सभा कक्ष में उत्साहपूर्ण वातावरण में मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री मामचन्द्र रिवाड़िया ने की। कार्यक्रम का सफल संचालन आर्य जगत के ख्याति प्राप्त आर्य संन्यासी तथा सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी अग्निवेश जी ने किया। इस अवसर पर देश के कोने–कोने से आये दलित नेता तथा सैकड़ों गणमान्य व्यक्तियों ने बाबा साहब अम्बेडकर को श्रद्धांजलि अर्पित की। समारोह में उड़ीसा के क्रान्तिकारी सामाजिक कार्यकर्ता आर्य कुमार ज्ञानेन्द्र, लुधियाना से पधारे श्री सन्त कुमार जी, रक्षा मंत्रालय के उपनिदेशक श्री नेतराम ठगेला, पूर्व महापौर श्रीमती शकुन्तला आर्या, देश तथा विदेश में दलितों की उन्नति तथा उन्हें बराबरी का स्थान दिलाने में प्राणपण से जुटे श्री विजय प्रताप जी, श्री चुन्नी लाल शास्त्री, स्वामी अग्निवेश जी के विशेष सहयोगी श्री मनु सिंह जी ने अपने ओजस्वी विचारों से कार्यक्रम को सफल बनाया।

इस महत्त्वपूर्ण अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए स्वामी अग्निवेश जी ने कहा आज मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि हम आर्य समाज की तरफ से डॉ. अम्बेडकर जी का जन्म दिवस मना रहे हैं। वर्ष 2005 में भी हमने इसी सभागार में डॉ. भीमराव अम्बेडकर का जन्म दिवस मनाया था। उस समय अनेकों सम्मानित दलित नेताओं ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा था कि आर्य समाज की शिरोमणि संस्था ने पहली बार बाबा साहब अम्बेडकर के सम्मान में ऐसा भव्य आयोजन किया है। आज पुनः हम सब उस महान आत्मा को स्मरण करने तथा उनके स्वप्नों को पूर्ण करने का संकल्प लेने के लिए यहाँ एकत्रित हुए हैं। स्वामी जी ने कहा कि सामाजिक पुनर्जागरण करने वाले महापुरुषों में डॉ. भीमराव अम्बेडकर का नाम बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है उन्होंने भारतीय समाज में सामाजिक धार्मिक राजनैतिक चेतना जगाने के लिए आजीवन कार्य किया। उन्होंने जातिभेद का कड़ा विरोध किया और जन सामान्य के हृदय में एक नवीन ज्योति को प्रज्ज्वलित किया तथा समाज में व्याप्त प्राचीन रूढ़िवादी मान्यताओं के उन्मूलन में महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान किया। स्वामी जी ने कहा कि डॉ. अम्बेडकर ने एक ऐसे सामाजिक धरातल की नींव रखी जिसमें दलित तथा पिछड़े वर्ग के लोगों की स्थिति प्रत्येक प्रकार के भेदभाव से मुक्त थी। डॉ. अम्बेडकर ने समता मूलक, शोषण रहित, हिंसा रहित एवं समरस समाज का स्वप्न देखा था और समाज की विसंगतियों, कुरीतियों, विषमताओं और विकृतियों पर निर्मम प्रहार किया। स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज प्रारम्भ से ही जाति पात विरोधी रहा है। हमने सप्त क्रान्ति का जो नारा दिया है उसमें जातिवाद मुक्त समाज बनाने का भी संकल्प है आज हम पुनः अम्बेडकर दिवस के अवसर पर आप सबका आह्‌वान करते हैं कि जातिवाद मुक्त समाज बनाने की संकल्पाग्नि अपने–अपने दिलों में धधकायेंगे। जिन्होंने अपने जीवन में अन्तर्जातीय विवाह किये हैं अथवा जो युवा आगे प्रेम विवाह करना चाहते हैं हम उन्हें प्रोत्साहित करेंगे। उनका अभिनन्दन करेंगे। स्वामी जी ने बताया कि पूरे देश में लगभग 1000 अन्तर्जातीय विवाह प्रतिदिन हो रहे हैं। जो लोग आर्य समाज में विवाह कराते हैं उन्हें एक सप्ताह पूर्व आर्य समाज का सदस्य बनायें और उसके बाद उनका विवाह करायें। स्वामी जी ने कहा कि यह आर्य समाज के लिए गौरव का विषय है कि लोग आर्य समाज में अन्र्जातीय विवाह कराने के लिए आते हैं। अन्तर्जातीय विवाह करने वालों को हर प्रकार की सुरक्षा तथा सहयोग प्रदान किया जाना चाहिए। जातिवाद को नष्ट करने के लिए इससे अच्छा कोई अन्य उपाय नहीं हो सकता।

स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज की उन्नति के लिए भी यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्य होगा। उन्होंने कहा कि हम सब मिलकर एक ऐसी आर्य विरादरी बनायें कि जो भी अपने

अगले पृष्ठ पर जारी

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी अग्निवेश जी बाबा साहब अम्बेडकर को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए

सम्पादक
प्रो. कैलाशनाथ सिंह

पृष्ठ–1 का शेष

डॉ. भीमराव अम्बेडकर का 122वाँ जन्म दिवस .....

को आर्य कहे उनके बीच सहज रूप से गुण, कर्म, स्वभाव की समानता में विवाह आदि के सम्बन्ध स्थापित हो सकें और लोगों को लगे कि आर्य समाज जातिवादी कोढ़ की बीमारी से मुक्त है। स्वामी जी ने कहा कि वही सच्चे अर्थों में दयानन्द के सपनों का आर्य समाज कहलायेगा। महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में जन्मना जातिवाद का विरोध किया है तथा वेद तथा मनुस्मृति पर आधारित वर्णाश्रम व्यवस्था का समर्थन किया है। लेकिन हम अपनी बात को आम जनता के सामने स्पष्ट नहीं कर पाये जिससे समाज में कुछ भ्रान्तियाँ फैल गई है हमें उन्हें दूर करना है तथा जातिवाद मुक्त एवं नारी उत्पीड़न मुक्त देश बनाने के लिए हमें वैदिक विचार का पुरजोर समर्थन तथा कार्य करना होगा।

स्वामी जी ने कहा कि जहाँ हम बाबा साहब अम्बेडकर का जन्म दिवस मना रहे हैं वहीं गौतमबुद्ध, सन्त रविदास, ज्योतिबाफुले, साहू महाराज के भी जन्म दिवस मनायें तथा उनके प्रेरणादायक प्रसंगों को याद कर जातिवाद मिटाने का संकल्प लें। स्वामी जी ने याद दिलाया कि देश में विभिन्न भागों जम्मू, उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश में ऐसे हजारों लाखों लोग हैं जो स्वामी श्रद्धानन्द जी की कृपा से जन्मना दलित होते हुए भी आर्य समाज में शामिल किये गये और वाकायदा अपने नाम के आगे आर्य लगाते हैं, कुछ कारणों से वे आर्य समाज की मुख्यधारा से अलग–थलग पड़ गये हैं। आज वह समय आ गया है कि हम उनको गले लगायें आर्य जगत में प्रतिष्ठित करें और अन्य आर्यों को भी अपने नाम के आगे जातिसूचक शब्द हटाकर आर्य लिखने की प्रेरणा दें ताकि एकरूपता बनी रहे। स्वामी जी ने कहा कि सरकार आर्यों को आरक्षण भी देती है तो यह, सोने पर सुहागा वाली बात हो गई कि आरक्षण का लाभ भी लो और जातिवाद भी मिटाओ।

स्वामी जी ने कहा कि आज भी हिन्दुओं के अतिरिक्त मुस्लिमों, इसाइयों और सिखों में जातिवाद पूरी तरह छाया हुआ है। एस. सी. तथा ओ. बी. सी. में भी यह प्रथा कायम है इन वर्गों में भी आपस में शादी विवाह कराये जाने चाहिए। स्वामी जी ने राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री गहलौत जी को बधाई दी कि उन्होंने अन्तर्जातीय विवाह करने वालों को पाँच लाख रुपये देने की घोषणा की। वो धन्यवाद के पात्र हैं उनका हम सार्वजनिक अभिनन्दन करेंगे। उन्होंने अन्य प्रदेशों के मुख्यमंत्रियों से भी अनुरोध किया कि वे भी इस प्रकार की घोषणायें करें और जातिवाद को दूर करने में अपना योगदान प्रदान करें। स्वामी जी ने कहा कि डॉ. अम्बेडकर अपने युग के एक सजग प्रहरी थे उन्होंने न केवल युग चेतना को जागृत किया अपितु युग बोध का भी संदेश दिया। उन्होंने अपने युग के समाज को खुली आँखों से देखा तथा उसके व्याप्त कटुता विषमता एवं आडम्बरों का डटकर विरोध किया। मैं उनको नमन करता हूँ। इस अवसर पर स्वामी अग्निवेश जी ने एक प्रस्ताव पढ़कर सुनाया जिसे अविकल रूप से आगे प्रकाशित किया जा रहा है।

इस अवसर पर लुधियाना से आये श्री सन्त कुमार जी ने अपने समाज सुधार के कार्यों का विवरण देते हुए कहा कि आर्य समाज जन्मना जातिवाद को नहीं मानता और आर्य समाज ने इस बुराई को मिटाने के लिए बहुत कार्य किया है उन्होंने कहा कि जातिवाद को मिटाने के लिए अन्तर्जातीय विवाह सबसे सरल रास्ता है। मैंने स्वयं अन्तर्जातीय विवाह किया है और मेरी माँ भी मुसलमान थी। उन्होंने कहा कि

शेष पृष्ठ 6 पर

अम्बेडकर जयंती – आर्य समाज के तत्वावधान में 14 अप्रैल, 2013

प्रस्ताव

आर्य समाज के प्रवर्तक तथा वेदों के अप्रतिम विद्वान् महर्षि दयानन्द ने जन्मना जातिवाद का पुरजोर विरोध करते हुए वैदिक वर्ण व्यवस्था को गुण, कर्म, स्वभाव पर आधारित बताया तथा "समान प्रसवात्मिका जातिः" के अनुसार मानव मात्र को एक जाति की संज्ञा दी। वेद तथा महर्षि दयानन्द की विचारधारा पर चलते हुए आर्य समाज पिछले 135 वर्षों से अन्तरजातीय अन्तरधार्मिक विवाह संस्कार नियमानुसार विधान सम्मत कराता रहा है। अब यह एक आंदोलन के रूप में जातिवाद मुक्त समाज बनाने का संकल्प लेकर अग्रसर होगा तथा जाति तोड़ो–समाज जोड़ो अभियान के अन्तर्गत सरकार से विशेष आरक्षण की भी माँग करता है। अन्तर्जातीय विवाहित युवाओं को सरकार द्वारा हर संभव आरक्षण दिया जाये।

आर्य समाज बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर को आर्य जगत की एक महान विभूति के रूप में सम्मानित करते हुए उनके Annihilation of Caste जाति उन्मूलन को अपना मिशन बनाकर सतत् सामाजिक क्रांति का आह्वान करता है। भविष्य में आर्य समाज के प्रमुख आयोजन सम्मेलनों आदि में अन्तर्जातीय विवाह किये दम्पत्तियों का सार्वजनिक अभिनन्दन कार्यक्रम रखेगा और युवाओं में दहेज रहित, जिम्मेदार परस्पर प्रेम आधारित, गुण, कर्म, स्वभाव की समानता में विवाह करने का अभियान चलायेगा।

राजस्थान सरकार द्वारा अन्तर्जातीय विवाहित दम्पत्ति को पाँच लाख रुपये के सहयोग का स्वागत करते हुए अन्य सभी प्रान्तीय सरकारों से ऐसे सहयोग की अपेक्षा रखेगा। साथ ही सरकारी नौकरी आदि में योग्यता के अन्य मापदण्डों की समानता में अन्तर्जातीय विवाहितों को प्राथमिकता देने की माँग करते हैं। यह सिद्धान्त जनजाति, अनुसूचित जाति एवं पिछड़ा वर्ग के सभी आरक्षणों के साथ सवर्ण–अवर्ण के बीच शादियों पर भी लागू हो ऐसी माँग करता है।

जातिवाद ऊँच–नीच, भेदभाव, छुआछूत आदि को भारतीय समाज पर सबसे बड़ा कलंक मानते हुए इसके हर संभव तरीके से उन्मूलन की दिशा में आर्य समाज आन्दोलित रहेगा। इसी माध्यम से वैदिक ऋषियों का वसुधैव कुटुम्बकम् का स्वप्न साकार करने में हम सबको साथ लेकर अग्रसर होंगे।

स्वामी अग्निवेश
संयोजक
प्रधान, सार्व. आर्य प्रति. सभा, नई दिल्ली–2

मामचन्द रिवाड़िया
कार्यक्रम अध्यक्ष

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश के प्रधान

प्रो. विट्ठलराव आर्य सार्वदेशिक सभा के मन्त्री तथा श्रीमती इन्दू बाला कोषाध्यक्ष नियुक्त

20–21 सितम्बर, 2013 को श्री फोर्ट सभागार, दिल्ली में "मांसाहार मुक्त समाज" के नाम से विशाल सम्मेलन होगा

सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा में लिये गये कई महत्त्वपूर्ण निर्णय

सार्वदेशिक सभा के नव–नियुक्त मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी के सम्मान का एक दृश्य

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 की अन्तरंग सभा की आवश्यक बैठक दिनांक 14 अप्रैल, 2013 को सभा कार्यालय के सभागार में सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी अग्निवेश जी की अध्यक्षता में प्रातः 11 बजे से प्रारम्भ हुई। इस बैठक में कई महत्त्वपूर्ण निर्णय लिये गये।

सर्व प्रथम ईश प्रार्थना के उपरान्त दिवंगत जनों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। सभा प्रधान स्वामी अग्निवेश जी ने शोक प्रस्ताव पढ़ा तथा दिवंगतों के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए कहा कि इन सब महानुभावों का निधन आर्य समाज एवं राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति है। इस दुःख की घड़ी में हम सब परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत जनों की आत्माओं को सद्गति एवं शान्ति प्रदान करें। इसके पश्चात् 2 मिनट का मौन रखकर दिवंगत जनों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

सभा प्रधान स्वामी अग्निवेश जी ने सदन को बताया कि विगत दिनों सार्वदेशिक सभा के यशस्वी मंत्री प्रो. कैलाशनाथ सिंह जी का निधन हो गया जिसके कारण सभा का मंत्री पद रिक्त है अतः आज की इस बैठक में सभा के मंत्री का चयन करना है। स्वामी जी ने कहा कि मंत्री जी के निधन से पूर्व सभा के कोषाध्यक्ष चौ. मित्रसेन जी का भी निधन हो गया था अतः सभा के कोषाध्यक्ष का भी चयन इस बैठक में किया जाना है। अतः आप सब मंत्री पद तथा कोषाध्यक्ष के पद के लिए नाम प्रस्तावित करें जिससे यह आवश्यक कार्य पूर्ण हो सके। सभा के मंत्री पद के लिए सभा के पुस्तकाध्यक्ष श्री जय प्रकाश भारती जी का लिखित प्रस्ताव स्वामी जी ने सदन को पढ़कर सुनाया जिसमें उन्होंने प्रो. विट्ठलराव जी का नाम सभा मंत्री के रूप में प्रस्तावित किया था। इस प्रस्ताव का अनुमोदन सभा के अन्तरंग सदस्य श्री संत कुमार आर्य लुधियाना ने किया। अन्य कोई नाम मंत्री पद के लिए प्रस्तावित नहीं हुआ। अतः सदन द्वारा सर्वसम्मति से प्रो. विट्ठलराव आर्य को सार्वदेशिक सभा का मंत्री नियुक्त किया गया। ज्ञातव्य हो कि प्रो. विट्ठलराव आर्य सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री भी थे। सभा प्रधान स्वामी अग्निवेश जी ने सभा के कोषाध्यक्ष पद के लिए भी नाम प्रस्तावित करने का निवेदन किया तो सभा के अन्तरंग सदस्य आर्य कुमार ज्ञानेन्द्र जी (उड़ीसा) ने कोषाध्यक्ष पद के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तराखण्ड की पदाधिकारी एवं सार्वदेशिक सभा की सभासद श्रीमती इन्दूबाला जी का नाम प्रस्तावित किया, अन्य किसी का नाम प्रस्तावित न होने के कारण सर्वसम्मति से श्रीमती इन्दूबाला जी को सार्वदेशिक सभा कोषाध्यक्ष नियुक्त किया गया। सभा प्रधान स्वामी अग्निवेश जी द्वारा दोनों पदाधिकारियों प्रो. विट्ठलराव आर्य को सभा मंत्री तथा श्रीमती इन्दू बाला जी को सार्वदेशिक सभा का कोषाध्यक्ष घोषित किया।

स्वामी अग्निवेश जी ने आर्य समाज की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डालते हुए कहा कि अपनी वैदिक संस्कृति को यदि वचाना है, अपने अस्तित्व को बचाना है, धराशायी होते जीवन मूल्यों को यदि बचाना है 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के समाघोष को सार्थक रूप से धरती पर उतारना है और आर्य समाज को पुनर्जीवित करना है तो हम सब एक दूसरे के पूरक बनें, मिलकर बैठे विचार करें आगे बढ़ें और सभी को अपना बनाकर चलें। समस्यायें बहुत हैं और हम सबको मिलकर आगे बढ़ना है। स्वामी जी ने कहा कि आज भी लाखों लोग ऐसे मिल जायेंगे जो आर्य समाज के सदस्य नहीं हैं लेकिन आर्य समाज की विचारधारा से प्रभावित है और समर्थक है। इनको जोड़कर हम आर्य समाज को आगे बढ़ा सकते हैं। स्वामी जी ने कहा कि किसी भी विचारधारा को आगे बढ़ाने के लिए अखबार एक बहुत बड़ा माध्यम है सार्वदेशिक सभा से "वैदिक सार्वदेशिक" पत्रिका का प्रकाशन होता है। यह पत्रिका यथोचित प्रभाव नहीं छोड़ पा रही है। हम चाहते हैं कि 'वैदिक सार्वदेशिक' नये रूप रंग (क्लेवर) में प्रकाशित हो, इसमें अच्छे विद्वानों के लेख प्रकाशित हों तथा वैबसाईट पर भी डाला जाना चाहिए, इसे अच्छे कागज तथा कई रंगों में प्रकाशित करके आधुनिक रूप दिये जाने की आवश्यकता है, लेकिन इसके लिए धन की आवश्यकता होगी। मेरा विचार है कि इस पत्रिका के लिए विज्ञापन प्राप्त किये जायें, ग्राहक संख्या में वृद्धि की जाये तथा इसे प्रभावशाली बनाया जाये। स्वामी जी ने आशा प्रकट की प्रो. विट्ठलराव जी मंत्री होने के नाते इस पत्रिका के पदेन सम्पादक है और वे वर्षों से 'आर्य जीवन' नामक लोकप्रिय पत्रिका के सम्पादक हैं और उसे तीन भाषाओं में अत्यन्त प्रभावशाली ढंग से प्रकाशित कर रहे हैं। वे 'वैदिक सार्वदेशिक' को आकर्षक, ज्ञान और चेतना का वाहक बनाकर आर्य समाज की सबसे उत्कृष्ट पत्रिका बनायेंगे। स्वामी जी ने कहा कि इसके लिए धन उपलब्ध कराना हम सबकी जिम्मेदारी है। स्वामी जी ने कहा कि अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग प्रतिमाह देने के लिए आप सब घोषणा करे। स्वामी जी ने आर्य समाज में महिलाओं तथा दलितों की भागीदारी पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि कम से कम 33 प्रतिशत दलित तथा महिलायें आर्य समाज में होनी ही चाहिए।

स्वामी जी ने आर्य समाज की गुटबन्दी पर अपने विचार व्यक्त करते हुए बताया कि तीन पक्षों में से एक पक्ष हमारा बिल्कुल भी सहयोग नहीं कर रहा है और वह अदालत के द्वारा ही निर्णय कराना चाहता है। एक कमेटी का गठन अदालत ने किया है जिस पर कई हजार रुपये प्रतिमाह मीटिंग व्यय आता है और निकट भविष्य में कोई निर्णय होने की सम्भावना नजर नहीं आ रही है। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के झगड़े आर्य समाज में प्रारम्भ से ही चले आ रहे हैं। उसको एक तरफ करके हमें आर्य समाज का कार्य करना है। स्वामी जी ने कहा कि सभा को सक्रिय करने के लिए यह आवश्यक है कि कोई नई व्यवस्था का प्रारूप तैयार किया जाये।

स्वामी जी ने कहा कि सार्वदेशिक सभा में न्यायमंच, अध्यात्म जागरण मंच एवं सामाजिक सप्तक्रांति मंच का भी गठन किया जाना चाहिए। स्वामी जी ने कहा कि हमारे सामने कई चुनौतियाँ हैं और

शेष पृष्ठ 6 पर

सुसंस्कारों द्वारा ही बच्चों का बहुमुखी विकास सम्भव

– पं. जगदीश चन्द्र 'वसु' वेदोपदेशक पानीपत

मानव निर्माण से ही राष्ट्र निर्माण और राष्ट्र निर्माण से ही ''कृण्वन्तोविश्वमार्यम्'' का नारा साकार हो सकता है, मानव निर्माण सुसंस्कारों द्वारा ही सम्भव है। इसीलिए बाल्यकाल से ही उस प्रकार की शिक्षा दी जाय जो

प्रत्येक मानव का जीवन उसके शैशव काल की शिक्षा पर आधारित हो जैसी शिक्षा मिलती है, उसी के अनुसार विचार बनते हैं, जैसे विचार होते हैं वैसे आचरण बनते हैं। बालक पन में डाले गये संस्कार अमिट होते हैं।

संस्कारों के बीजारोपण हेतु बाल्यकाल का जितना महत्त्व है, उतना बड़ी आयु का नहीं, इस तथ्य को भली–भांति समझ लेना चाहिए, प्रत्येक शिशु गीली कच्ची मिट्टी का बना होता है, इस अवस्था में उसे जैसा चाहे रूप प्रदान किया जा सकता है। आवश्यकता मात्र इतनी है कि पालक या शिक्षक उनसे जिस प्रकार की शिक्षा की अपेक्षा रखते हैं, सर्वप्रथम उसे अपने आचरण में उतारें और उनके समक्ष प्रस्तुत करें तो ही बच्चों के बहुमुखी विकास में कुछ कहने लायक सहयोग मिलेगा। मानवीय व्यक्तित्व के विकास में जन्मदाताओं, अभिभावकों एवं शिक्षकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। माता–पिता का यह प्रमुख दायित्व है कि शिशु के जन्म के पूर्व ही अपने ऊपर आने वाले दायित्वों को समझें, और उसके लिए नैतिक, आर्थिक, शारीरिक व मानसिक रूप से तैयार हो जायें। इसीलिए जन्म से पूर्व तीन संस्कार गर्भाधान संस्कार, पुंसवन, सिमन्तोनयन संस्कार किये जाते हैं – चौथा संस्कार जात कर्म संस्कार हैं – इस संस्कार में बालक की जिह्वा पर, ''ओ३म्'' शब्द सोने की शलाका से लिखा जाता है और कान में ''त्वं वेदोऽसि'' शब्द का उच्चारण किया जाता है। यहाँ से शिशु (बालक) के जीवन का निर्माण आरम्भ होता है।

बच्चों के जन्म से लेकर किशोरावस्था तक माता–पिता, पालकों को विशेष रूप से सतर्क रहने की आवश्यकता पड़ती है प्रायः देखा जाता है कि माता–पिता अपने बच्चों से उच्च आकांक्षायें रखते हैं, किन्तु वे भूल जाते हैं कि उनकी कोमल भावनायें उन सबको ग्रहण करने के लिए तैयार भी हैं, अथवा नहीं?प्रायः ऐसा देखा जाता है कि असंतुलित मनःस्थिति या दुराग्रही स्वभाव वाले माता–पिता की सन्तानें भी उसी सांचे में ढल जाती हैं। दिनचर्या या आहार–विहार का प्रभाव भी बच्चों के कोमल मस्तिष्क पर पड़े बिना नहीं रहता। जन्मदाता चाहे तो आध्यात्मिक विचारों एवं जीवनचर्या को अपनाकर जहाँ एक ओर अपना सुधार कर सकते हैं, वहीं दूसरी ओर बच्चों पर भी उसका अमिट प्रभाव डालकर उनके व्यक्तित्व के विकास में अहम भूमिका निभा सकते हैं, तब बिना किसी प्रशिक्षण के वे उस मनःस्थिति में स्वयं ढलते चले जायेंगे। इतिहास इस बात का साक्षी है।

इस संदर्भ में माट्रियल के माईकल गिल विश्व विद्यालय के मूर्धन्य वैज्ञानिक डॉ. ईगल पेडरसन ने अपने सहयोगियों के साथ गहन अनुसन्धान किया है, निष्कर्ष प्रस्तुत करते हुए उन्होंने बताया है कि जिन बच्चों के साथ उनके अभिभावकों (माता–पिता) एवं शिक्षकों का व्यवहार उदारतापूर्ण प्रेम व करूणामय वात्सल्यता के साथ परिपूरित था, उनकी शारीरिक, मानसिक, विकास दरें बढ़ी–चढ़ी रहीं, इसके विपरीत जिन बच्चों के साथ कठोर, ताड़ना व निर्ममता पूर्ण व्यवहार किया गया, वे सन्तानें प्रायः इसके अभ्यस्त बन गये, और अपनी नैसर्गिक क्षमता खो बैठे। मेधावी एवं प्रतिभाशील होते हुए भी वे कम अंक ही प्राप्त कर सके। खोजने पर पाया गया कि अच्छे अंक प्राप्त करने वाले प्रायः सभी बच्चों को एक उदार वात्सल्य प्रेम भाव का मिला हुआ था। शिक्षक एवं अभिभावक उनके प्रति करूणा एवं वात्सल्य का भाव रखते और आगे बढ़ने हेतु प्रोत्साहित करते थे। कनाडा के ओटारियो इस्टीट्यूट फार स्टडीज के बाल मनोविज्ञान विशेषज्ञ रीगल कालवे ने अपने शोध निष्कर्ष में बताया है कि बच्चों के मानवोचित गुणों के विकास में स्नेहपूर्ण वात्सल्य युक्त वातावरण का गहरा प्रभाव पड़ता है।

आत्मीयता पूर्ण वातावरण में प्रशिक्षण देने से बच्चों (बालक–बालिकाओं) के ज्ञान–विज्ञान के केन्द्र केन्द्रीय मस्तिष्क का विकास सरलता पूर्वक होता है। प्रयोग परीक्षणों में पाया गया है कि जिन बच्चों को सु–संस्कारयुक्त एवं आत्मीयतापूर्ण वातावरण प्रदान किया गया वे साधन सुविधाओं से रहित होते हुए भी शीघ्र ही पढ़ना–लिखना सीख गये, और मेधावी प्रतिभाशाली छात्रों की श्रेणी में गिने जाने लगे। इसके विपरीत सुविधा सम्पन्न उत्तम परिस्थितियों के रहते हुए भी जिन्हें समस्या मूलक समझा और तद्नुरूप हीन व्यवहार किया गया, वे मंद बुद्धि भी पाये गये और उद्दण्ड स्वभाव वाले भी, ''ट्रबुल्ड टीचर्स'' नामक ग्रन्थ में सुप्रसिद्ध शिक्षा मनोवैज्ञानिक रोला ने कहा है कि बच्चों का गुणी होना एवं शिक्षा को प्रति अभिरुचि होना उतना आवश्यक नहीं होता, जितना कि जन्मदाताओं तथा शिक्षकों का स्वयं गुणवान होना, उनके अनुसार जिस प्रकार कोई भी रोग असाध्य नहीं, उसी प्रकार कोई बच्चा शिक्षा ग्रहण करने में असमर्थ नहीं होता। जब हिंसक वन्य प्राणियों, पशु–पक्षियों को प्रशिक्षित किया जा सकता है तो कोई कारण नहीं कि ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना (कृति) मानव शिशु की वांछित दिशा में उच्चस्तरीय प्रशिक्षण न दिया जा सके। आवश्यकता मात्र उन्हें उचित मार्ग दर्शन देने एवं उस दिशा में बढ़ चलने के लिए प्रोत्साहित करने की है। यह बन पड़ना तभी सम्भव है जब अध्यापक, माता–पिता एवं अभिभावक अपने को सांझा समझे और तदनुरूप अपनी कमजोरियों को दूर कर पूर्वाग्रहों से ऊपर उठकर एक समग्र व्यक्तित्व के रूप में स्वयं उनके समक्ष एक नमूना बने।

आर्यों! हम मानव निर्माण कर आध्यात्मिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय उन्नति में सहायक बनते हुए कृण्वन्तों विश्वमार्यम के नारे को साकार रूप दे सके। ओमित्योम्।

सच्चा तो वैदिक धर्म है पकड़ा जाये तो पकड़लो।
नहीं तो ऐसे ही गोते खाते रहोगे।।

पातंजलि योग धाम आर्य नगर (हरिद्वार) में ध्यान योग शिविर सम्पन्न

ध्यान योग शिविर दिनांक 1 अप्रैल से 12 अप्रैल, 2013 तक जिसमें 1 से 5 अप्रैल, 2013 तक विशेष शिविर और 6 से 12 तक ध्यान योग शिविर रहा।

पूर्णाहुति के दिनांक 12 अप्रैल, 2013 को पूज्य स्वामी दिव्यानन्द जी का जन्म दिवस भी बड़े प्रेम और श्रद्धा से मनाया गया।

स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती, व्यवस्थापक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली ने स्वामी दिव्यानन्द जी के जन्म दिवस के शुभ अवसर पर आशीर्वचन कहते हुए कहा कि स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी वैदिक ऋषि परम्परा के निष्ठावान योगी हैं। ये स्वभाव से मृदुभाषी, कदापि क्रोध न करने वाले और विरक्तों में उच्चता को प्राप्त हैं। स्वामी जी ने वेदों में योग शिक्षा पर शोध पत्र लिखकर पी. एच. डी. की उपाधि प्राप्त की है और कई स्थानों पर योग केन्द्र स्थापित किये हैं। विदेशों में भी स्वामी जी ने योग और वैदिक सभ्यता का प्रचार किया है।

आप अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक विरक्त मण्डल, नई दिल्ली के कार्यकारी अध्यक्ष हैं और विरक्तों के उत्थान हेतु प्रयासरत हैं। स्वामी सोम्यानन्द जी ने उनकी दीर्घ आयु की कामना के साथ आर्शीवाद प्रदान किया।

शिविर में यजमान के स्थान पर श्री चौ. सरदार सिंह जी और उनकी पुत्री सोनिया मुख्य यजमान रहे। जिन्होंने यजुर्वेद पारायण यज्ञ का अनुष्ठान किया।

प्रतिदिन के यजमान :– श्री चौ. सरदार सिंह जी व पुत्री सोनिया, श्री गुणवीर सिंह व पदया जी दिल्ली, भारतीय यति जी योगधाम हरिद्वार, श्रीमती निर्मला जी व श्री शिवचरण सिंह जी दिल्ली, माता सुकीर्ति यति जी वानप्रस्थ आश्रम, धारणा यति जी, पत्नी श्री अमर मुनि जी योगधाम हरिद्वार, सुशीला जी ज्वालापुर तथा अन्य यजमान भी समय–समय पर बनते रहे।

स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी से वानप्रस्थ की दीक्षा लेने वाले निम्नलिखित हैं :– श्री हर्षलाल जी हितैषी, आर्य नगर ज्वालापुर, श्री श्याम सिंह जी चौहान खुब्बनपुर भगवानपुर रुड़की के रहने वाले, श्री बुद्ध प्रकाश जी आर्य शास्त्री नगर, मेरठ, श्री राम लाल जी फरीदाबाद, श्री हजारी प्रसाद जी, फरीदाबाद ने वानप्रस्थ लिया जिनके नाम क्रमशः हितैषी मुनि, श्याममुनि, प्रकाश मुनि, निष्काम मुनि और आत्म मुनि नाम रखे गये। वेदपाठी श्री देवेन्द्र कुमार आर्य और माधुरी आर्य ने अच्छे सुन्दर ढंग से वेद पाठ किया। ब्रह्मा पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती रहे।

आश्रम में व्यवस्था को श्री मुकेश वेदार्थी, श्री सत्य मुनि जी, श्री ललित मुनि, श्री विद्यामुनि और श्री आत्म मुनि (हजारी प्रसाद जी) ओर आश्रम के मन्त्री शरण मुनि ने कार्यभार सम्भाला और साधकों को सेवा हेतु दिल्ली से आये श्री नन्द किशोर अरोड़ा जी ने सराहनीय कार्य किया। प्रातःकाल चार बजे उठकर मौन रहकर सौचादि से निवृत्त होकर 5 बजे से 6.30 तक तक ध्यान व योग कराया गया। 7 बजे से यज्ञ और 8 बजे प्रातरास करने के बाद 12:30 पर भोजन का प्रबन्ध भी इन्हीं सभी व्यवस्थापकों ने कुशलता से किया।

सभी संन्यासियों का सम्मान भी किया गया। पूर्ण आहुति के बाद प्रसाद आदि का वितरण किया गया और दोपहर के भोजनोपरान्त सभी लोग प्रस्थान कर गये।

शरण मुनि, मंत्री, पातंजलि योग धाम, आर्यनगर हरिद्वार, (उत्तराखण्ड)

19 अप्रैल जन्मदिवस पर विशेष

महात्मा हंसराज – एक स्मरणांजलि

– डॉ. शशिप्रभा कुमार

स्तिमितोन्नतसंचाराः जनसन्तापहारिणः। जायन्ते विरला लोके जलदा इव सज्जनाः।। पंचतन्त्र

अर्थात् दृढ़ और उत्तम आचरण वाले, लोगों का कष्ट दूर करने वाले, बादल के समान उपकार करने वाले सत्पुरुष इस लोक में विरले ही उत्पन्न होते हैं।

महात्मा हंसराज ऐसे विरले सत्पुरुषों में अग्रण्य हैं जिन्होंने एक महान् उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपना सर्वस्व अर्पित कर दिया। इतिहास साक्षी है कि यदि उन्नीसवीं सदी के पराधीन एवं रूढ़िग्रस्त भारत में महर्षि दयानन्द सरस्वती का बलिदान एवं उससे प्रेरित होकर जीवन उत्सर्ग करने वाले महात्मा हंसराज, महात्मा मुंशीराम (बाद में स्वामी श्रद्धानन्द) एवं लाला लाजपतराय जैसे धुन के धनी न होते तो आज हमारे समाज का यह स्वतंत्र परिदृश्य और हमारी शिक्षा का यह समुन्नत स्वरूप न होता। इसमें सन्देह नहीं कि डी. ए. वी. शिक्षण संस्थाओं और आर्य गुरुकुलों से शिक्षित एवं दीक्षित होकर निकले युवकों ने देश को स्वाधीन बनाने एवं शिक्षा में संस्कृत, संस्कृति तथा संस्कारों की अलख जगाने में जितना योगदान किया है, वह अमूल्य है।

19 अप्रैल, सन् 1864 ई. में बजवाड़ा (जिला होशियारपुर, पंजाब) गाँव में लाला चूनीलाल एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती गणेशीदेवी के यहाँ जिस शिशु ने जन्म लिया, उसने बड़ा होकर न केवल अपना जीवन धन्य किया, अपितु अपने कुल को भी इतिहास में अमर बना दिया। राजकीय कालेज, लाहौर से बी. ए. तक शिक्षा प्राप्त करने वाला बाईस वर्ष का युवक हंसराज यदि केवल अपने सुख की सोचता तो आज हम उसका नाम भी न जानते लेकिन दयानन्द के दीवाने हंसराज ने तो ऋषि–ऋण से उऋण होने के लिए अपना सारा जीवन दयानन्द एंग्लो वैदिक कॉलेज (डी. ए. वी. कॉलेज) के मुख्याध्यापक पद पर अवैतनिक सेवा के लिए समर्पित कर दिया। जीवन–उत्सर्ग की ऐसी अविस्मरणीय घटना ने असंख्य नौजवानों में जोश भर दिया और अगणित दानी महानुभावों को इतना प्रेरित कर दिया कि वे सब तन–मन–धन लुटाने को तत्पर हो गये। धन्य हैं वे लोग जिन्होंने उस घड़ी को जिया और इस सर्वस्व–त्याग को साक्षात् देखा।

कहना न होगा कि डी. ए. वी. कॉलेज की स्थापना ने एक आन्दोलन को जन्म दिया जिससे दासता की बेड़ियों में जकड़े हुए देश के नागरिकों में आत्मविश्वास एवं अपनी महान् संस्कृति के प्रति गौरव का भाव हिलोरें करने लगा। महात्मा हंसराज जी जैसे तपस्वी एवं निस्वार्थ गुरु को ही हमारे शास्त्रों में 'आचार्य' की पदवी प्रदान की गई है –

''आचार्य : कस्मात्?आचारं ग्राहयति, आचिनोति बुद्धिमर्थान् वा।'' (निरूक्त)

अर्थात् शिक्षक को 'आचार्य' क्यों कहा जाता है?सर्वप्रथम तो इसलिए कि वह अपने शिष्यों को आचार ग्रहण कराता है (अपने आचरण से उन्हें आचार की शिक्षा देता है), दूसरा इसलिए कि बुद्धि को तीक्ष्ण बनाता है एवं तीसरा इसलिए कि उन्हें विविध विषयों का ज्ञान कराता है।

आज के वेतनभोगी, सुविधाजीवी शिक्षकों एवं वस्तुतः ढोंगी, पाखण्डी किन्तु तथाकथित गुरुओं से उस प्रकार के उदात्त ज्ञान एवं अनवद्य आचार की शिक्षा मिलना असम्भव नहीं तो दुष्कर अवश्य है। मुख्याध्यापक होते हुए भी महात्मा हंसराज जी स्वयं छात्रों की कक्षायें लेते थे, प्रशासन कार्य देखते थे तथा अपने सहयोगियों एवं विद्यार्थियों में देशभक्ति के भाव भरने की चेष्टा करते रहते थे। उनका 'सादा जीवन उच्च विचार' वाला जीवन स्वयं साधना का साक्षात् निदर्शन था। त्याग एवं तपस्या का ऐसा अद्भुत

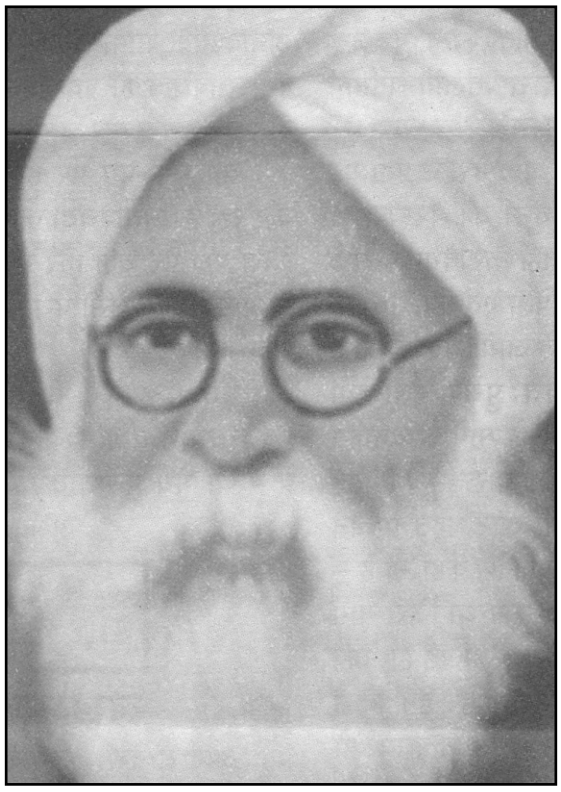

मणिकांचन संयोग महात्मा जी को समाज के हर वर्ग में अपूर्व सम्मान एवं प्रतिष्ठा दिला गया, किन्तु उनके छात्र तो मानो उनके एक संकेत पर जान छिड़कने को तैयार रहते थे। महात्मा जी भी अपने छात्रों की हितचिन्ता में परम आत्मीयता का अनुभव करते थे। गुरु–शिष्य सम्बन्धों का ऐसा मार्मिक किन्तु मर्यादापूर्ण उदाहरण भी आज मिलना दुर्लभ है।

महात्मा हंसराज ने अपने 'स्व' का ऐसा विस्तार कर लिया था कि वे केवल अपने रक्त सम्बन्ध से जुड़े परिवार नहीं अपितु व्यापक वैदिक परिवार की चिन्ता में व्यग्र रहते थे। यद्यपि यह भी सत्य है कि महात्मा जी के त्यागमय जीवन के पीछे उनके बड़े भाई जी का अपूर्व सहयोग एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती ठाकुरदेवी जी की मौन तपस्या भी बहुत बड़ा आधार थी। किन्तु स्वयं महात्मा जी तो मानो इन सब सीमाओं से ऊपर उठ चुके थे तथा गृहस्थ होकर भी सर्वात्मना समाज सेवा में सन्नद्ध थे। स्वाधीनता आन्दोलन, हैदराबाद सत्याग्रह, हिन्दी प्रचार, प्राध्यापन, प्रबन्धन, प्रवचन एवं लेखन आदि विविध क्षेत्रों में पूर्ण निष्ठा से दायित्व निर्वाह करते हुए महात्मा हंसराज ने अपनी व्यक्तिगत समस्याओं और चुनौतियों को कभी अपने कर्त्तव्य पालन में बाधक नहीं बनने दिया। पत्नी का निधन एवं पुत्र की राजनैतिक गतिविधियों के कारण उसे दी जाने वाली अनेक प्रकार की यातनायें भी उन्हें विचलित न कर सकीं।

निर्द्वन्द्व, निर्भीक और निस्वार्थ वृत्ति के धनी किन्तु भौतिक सुख, सम्पत्ति एवं सुविधाओं से सर्वथा निरपेक्ष 'महात्मा' हंसराज जी ने मानो अपने माता–पिता द्वारा दिये गये नाम को शब्दशः सार्थक कर दिया। तभी तो संस्कृत के कवि की निम्न उक्ति सटीक प्रतीत होती है।

यत्सारभूतं तदुपासितव्यं हंसो यथा क्षीरमिवाम्बुमिश्रम्।

अर्थात् जो सार है उसी का ग्रहण करना चाहिए जैसे कि हंस जलमिश्रित दूध में से केवल दूध ग्रहण कर लेता है।

नीर–क्षीर विवेक की सामर्थ्य रखने वाले राजहंस की भाँति महात्मा हंसराज जी ने भी जीवन के सार–सर्वस्व को समझ लिया था, तभी तो निस्सार बातों की उपेक्षा करते हुए एकनिष्ठ भाव से अपने ध्येय की सिद्धि में लगे रहे। उनकी साधना और समर्पण के कारण डी. ए. वी. आन्दोलन सप्राण हो उठा। किन्तु कैसी विडम्बना कि उनके प्राण पखेरू उड़ते ही वह सात्विक सद्भावना धीरे–धीरे निष्प्राण होने लगी। आशा है कि आज महात्मा हंसराज जी के जन्मदिवस पर डी. ए. वी. के सूत्रधारों में, विशेषतः श्री पूनम सूरी जी की अध्यक्षता में (जिसमें पितामह महाशय खुशहालचन्द्र जी को ही महात्मा हंसराज जी ने अपना हार्दिक अभिप्राय कहा तथा जिन्होंने आमरण उसे बखूबी निभाया भी यह प्रेरणा जागृत होगी कि जिन पुण्यात्माओं ने अपने खून–पसीने से सींच कर यह पौधा लगाया है, उनके प्रति वास्तविक श्रद्धांजलि तभी होगी जब उनके जीवन सन्देश का अनुपालन होगा तथा यह पौधा सदा हरा भरा रहेगा।

प्रभु से प्रार्थना है कि हम सबको ऐसी सन्मति, समार्थ्य एवं सदिच्छा प्रदान करें स्वयं महात्मा हंसराज के शब्दों में – ''प्यारे मित्रों! आओ, ईश्वर के दरबार में प्रार्थना करें कि वह हमें लुप्त गुप्त वैदिक धर्म को पुनर्जीवित करने अथवा प्रसारित करने की शक्ति प्रदान करें।''

'अभ्युदय' –295/15–ए, नोएडा, कृ प्र.

महात्मा धर्ममुनि संन्यास दीक्षा लेकर स्वामी धर्मानन्द बने

आर्य समाज, कौकेरा (मथुरा) के वार्षिकोत्सव दिनांक 15 से 17 मार्च, 2013 के शुभ अवसर पर महात्मा धर्ममुनि (कौकेरा) ने स्वामी आर्यवेश जी, महामंत्री वैदिक विरक्त मण्डल, संयोजक संचालन समिति, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं अध्यक्ष स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ टिटौली (रोहतक) हरियाणा के ब्रह्मत्व में संन्यास आश्रम की दीक्षा प्राप्त की।

इस अवसर पर यज्ञ और दीक्षा की प्रक्रिया का संचालन तथा वेदमंत्रों का उच्चारण स्वामी सोम्यानन्द जी (मथुरा) ने किया।

दीक्षा उपरान्त स्वामी आर्यवेश जी ने संन्यास आश्रम की उपयोगिता और आवश्यकता बतलाते हुए कहा कि संन्यास आश्रम का मूल उद्देश्य सांसारिक बन्धनों से छूट कर ईश स्मरण में लीन होना और जीवन में प्राप्त शिक्षाओं, अनुभवों, आदि से मानव समाज को सत्य का मार्गदर्शन कराना है। स्वामी सोम्यानन्द जी ने अपने प्रवचन में कहा कि संन्यासी को मितभोगी, ऋतुभोगी, हितभोगी के साथ–साथ अहंकार, द्वेष, ईर्ष्या, निन्दा और मान–अपमान से रहित होना चाहिए और सम्पूर्ण संसार को बन्धुत्व की भावना से वर्तना चाहिए और हर समय परमात्मा का स्मरण करते रहना चाहिए।

इस शुभ अवसर पर श्री विपीन विहारी, अध्यक्ष, आर्य उपप्रतिनिधि सभा, मथुरा, श्री ब्रजकिशोर, महामंत्री, आर्य उपप्रतिनिधि सभा, मथुरा, श्री वीरेन्द्र आर्य, पूर्व महामन्त्री आर्य उपप्रतिनिधि सभा (मथुरा) स्वामी प्रकाशानन्द, स्वामी रामानन्द, मं. देवमुनि, म. राजमुनि, म. भगवान देव जी (बफेरा), श्री वेद प्रकाश जी तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति निकटवर्ती गाँवों के प्रधान, अध्यापक आदि के साथ भारी संख्या में जन समूह उपस्थित था जिन्होंने स्वामी धर्मानन्द जी का करतल ध्वनि से स्वागत व सम्मान किया और भिक्षा दान दिया।

इस अवसर पर भजनोपदेशक श्री नरेश दत्त, श्री देवी सिंह, श्री रामगोपाल, श्री राममुनि आदि ने भी अपने भजनों से जन समूह को मंत्रमुग्ध कर दिया।

– वेद प्रकाश, मंत्री, आर्य समाज कौकेरा, मथुरा

पृष्ठ–2 का शेष

डॉ. भीमराव अम्बेडकर का 122वाँ जन्म दिवस .....

जात–पात के कारण हमारे दलित भाई हमसे दूर होते जा रहे हैं। उन्हें अपने गले लगाने की आवश्यकता है आज दलितों और निर्धनों में जाकर काम करने की आवश्यकता है।

इस अवसर पर उड़ीसा के प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता आर्य कुमार ज्ञानेन्द्र जी ने कहा कि उड़ीसा में जात–पात का भेद अपेक्षाकृत कम है वहाँ के प्रसिद्ध मन्दिरों में मूर्ति पूजक और दलित वर्ग के लोग बैठकर प्रसाद ग्रहण करते हैं। उन्होंने कहा कि आर्य समाज की विचारधारा और अम्बेडकर की विचारधारा में कोई खास फर्क नहीं है लेकिन किन्हीं कारणों से आर्य समाज का चिन्तन डॉ. अम्बेडकर को प्रभावित नहीं कर पाया या उनको सही मार्ग दर्शन नहीं मिल पाया। यदि डॉ. अम्बेडकर आर्य समाज के साथ मिल जाते तो भारत का नक्शा ही कुछ और होता।

डॉ. अम्बेडकर को श्रद्धांजलि देते हुए श्री नेतराम जी ने कहा कि डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने दलितों के उत्थान में विशेष योगदान प्रदान किया। श्री नेतराम जी ने कहा कि मैं स्वामी अग्निवेश जी से बहुत प्रभावित हूँ और उन्हें अपना प्रेरणा स्रोत मानता हूँ। उन्होंने कहा कि मैंने स्वामी जी के साथ कई बार आन्दोलनों में भाग लिया है। डॉ. अम्बेडकर का आन्दोलन केवल दलितों के लिए नहीं था उन्होंने महिलाओं के उत्थान के

लिये भी बहुत कार्य किया है। उन्होंने डॉ. अम्बेडकर को आधुनिक भारत का नींव का पत्थर बताया। उनका कहना था कि डॉ. भीमराव अम्बेडकर पूरी मानव जाति के मसीहा थे। उन्होंने कहा कि सारी मानव जाति एक समान है चाहे जन्मना जात–पात हो या गुण कर्म स्वभाव से जात–पात हो जाति सूचक शब्द होने ही नहीं चाहिए। उन्होंने कहा कि डॉ. अम्बेडकर सामाजिक न्याय के मसीहा थे।

इस अवसर पर अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए श्री विजय प्रताप जी ने कहा कि आज की परिस्थितियों में जातिवाद तोड़ो का नारा कहीं अगर विश्वसनीयता के साथ लिया जाता है तो वह आर्य समाज में लिया जाता है। समता की लड़ाई में आर्य समाज ने अत्यधिक प्रशंसनीय कार्य किया है लेकिन अभी बहुत काम बाकी है, देश–विदेश के अपने संस्मरण तथा किये गये कार्यों का दिग्दर्शन कराते हुए उन्होंने कहा कि पूरे दक्षिण एशिया में जाति को कैसे तोड़ा जाये इस पर चिन्तन करने की आवश्यकता है उन्होंने कहा कि जातिवाद आज भी अपने पैर पसारे हुए है। इसाई, मुसलमान और सिखों में भी जात–पात की स्थिति अच्छी नहीं है। उन्होंने कहा कि अभी बहुत लम्बी लड़ाई लड़नी बाकी है।

इस अवसर पर युवा विचारक श्री मनु सिंह जी ने कहा कि सबसे पहली आवश्यकता है कि हम सब जाति सूचक शब्द लगाना बन्द करे और दलित तथा पिछड़ी जातियों को आर्थिक रूप से उन्नत करने का प्रयास किया जाये। उन्होंने कहा कि पारम्परिक रोजगार को बढ़ावा देते हुए जो व्यक्ति जिस

कार्य में निपुण हो उसे उस क्षेत्र में मदद पहुँचाई जानी चाहिए। जाति एक मानसिक जकड़न है उसको दूर करना होगा। विवाह के उपरान्त स्त्री के जाति सूचक शब्द को बदल कर पुरुष का जाति सूचक शब्द लगा दिया जाता है। जाति को अपने नाम से हटाना ही होगा। उन्होंने कहा कि हम सब अपने नाम के आगे आर्य लगाये।

महाराष्ट्र से आये श्री जगदीश आर्य जी ने कहा कि आर्य समाज और डॉ. अम्बेडकर का बहुत करीबी नाता है उन्होंने आर्य समाज में रहकर ही अपनी प्राथमिक शिक्षा प्राप्त की। महाराष्ट्र से श्री प्रकाश अम्बेडकर जो भीमराव अम्बेडर के पौत्र हैं उन्होंने महाराष्ट्र सरकार के पास प्रस्ताव भेजा है कि स्कूल के सर्टिफिकेट से ही जाति सूचक शब्द हटा दिया जाना चाहिए। मुझे लगता है कि यह अत्यन्त महत्त्व पूर्ण कार्य है और सभी स्थानों से सभी संस्थाओं से इसके समर्थन में महाराष्ट्र सरकार को प्रस्ताव भेजे जाने चाहिए।

श्री मुक्ति प्रकाश टिर्की ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि मैं डॉ. अम्बेडकर का शुक्रगुजार हूँ कि उनके कारण आज दलितों को आदमी के रूप में मान लिया गया है। उन्होंने कहा कि डॉ. अम्बेडकर ने कहा था कि शिक्षित बनो और अपने कर्मों को उच्च बनाते हुए आगे बढ़ो। उन्होंने कहा कि शिक्षित बनें कैसे पं. बंगाल तथा अन्य कई स्थानों पर आज भी शिक्षा का कोई प्रबन्ध नहीं है। कांकेर की घटना से आप सब परिचित हैं कुछ बालिकाओं ने वहाँ शिक्षित होने का प्रयास किया तो उनका क्या हाल हुआ यह बताने की आवश्यकता नहीं है। सरकार तथा समाज पिछड़ों दलितों को शिक्षित ही नहीं होने देना चाहती।

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री मामचन्द्र रिवाड़िया जी ने अपने संक्षिप्त उद्‌बोधन में अपने जीवन के संस्मरण सुनाते हुए कहा कि मैं स्वयं एक दलित हूँ और आर्य समाज ने जितनी दलितों पिछड़ों की सहायता की है सम्मान दिलाया है वह किसी और ने नहीं किया। उन्होंने कहा कि राजस्थान सरकार द्वारा उठाये गये कदम के कारण मैंने उनको बधाई का पत्र लिखा है। डॉ. अम्बेडकर ने जो कार्य प्रारम्भ किया था उसे पूर्ण करने और जातिवाद को मिटाने तथा पिछड़ों, आदिवासियों और दलितों को उन्नत करने के लिए अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है।

इस अवसर पर श्री प्रेमपाल शास्त्री, श्री चुन्नीलाल शास्त्री, श्री भूपनारायण शास्त्री सहित अनेकों गणमान्य व्यक्तियों ने बाबा साहब अम्बेडकर को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा। इस कार्यक्रम को चार चाँद लगाने में मीडिया ने भी महत्त्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया। टी. बी. तथा अखबारों के कई प्रतिनिधियों ने इस कार्यक्रम को कवर किया। कार्यक्रम के अन्त में जलपान की सुन्दर व्यवस्था की गई थी।

पृष्ठ–3 का शेष

सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा में लिये...

अब आक्रामक होकर कार्य करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि संसार का उपकार करना हमारा मूल मंत्र है उसके अनुरूप हमें कार्य करना होगा। किसानों, भूमिहीनों, दलितों की आवाज़ बनना होगा आर्य समाज को। स्वामी जी ने पशु हिंसा की चर्चा करते हुए कहा कि आज करोड़ों पशु प्रतिदिन मारे जा रहे हैं लेकिन आर्य समाज चुप है। हम हिंसा मुक्त समाज बनाने पर बल देते हैं हमारे सप्तक्रांति कार्यक्रम में हिंसा को प्रमुख मुद्दा बनाया गया है। मांसाहार मुक्त समाज के नाम से एक विशाल सम्मेलन कुछ ही समय में हम करेंगे। स्वामी जी ने कहा कि आज जो युद्ध का वातावरण बन रहा है उसमें पशु हिंसा एक बहुत बड़ा कारण है क्योंकि आज मनुष्य निर्मम होता जा रहा है।

स्वामी जी ने कहा कि जातिवाद से देश का बहुत बड़ा अहित हो रहा है इसके विरूद्ध राष्ट्रीय स्तर पर कार्य करना होगा। हम सब अन्तर्जातीय विवाह को बढ़ावा दें और अन्य धर्मों के व्यक्तियों को भी आर्य समाज में लायें।

स्वामी जी ने घोषणा की आगामी 20–21 सितम्बर, 2013 को श्री फोर्ट सभागार में ''मांसाहार मुक्त समाज'' के नाम से विशाल सम्मेलन आयोजित किया जायेगा।

इस अवसर पर बोलते हुए नवनियुक्त सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने कहा कि सार्वदेशिक सभा का कार्य विधिवत चलाने के लिए 101 सदस्यों की प्रबन्ध समिति बना लेनी चाहिए। इसके सभी सदस्य कर्मठ, सशक्त तथा दानवीर और आर्य समाज के लिए कुछ कर गुजरने की भावना से भरपूर होने चाहिए। इस समिति में समाज के सभी वर्गों से कुछ गणमान्य सदस्य, विदेशों के कुछ सदस्य तथा कम से कम एक तिहाई संख्या में महिलाओं की भागीदारी इसमें होनी चाहिए। यह 101 सदस्यीय समिति आर्थिक प्रबन्ध करते हुए सार्वदेशिक सभा का समस्त कार्य संचालन करेगी। उन्होंने कहा कि इस समिति के प्रत्येक सदस्य को कम से कम 10,000 रुपये प्रतिवर्ष सार्वदेशिक सभा को देना होगा। उन्होंने कहा कि इस प्रक्रिया से सार्वदेशिक सभा की आर्थिक स्थिति भी सुदृढ़ होगी तथा हमको कर्मठ कार्यकर्त्ता भी प्राप्त होंगे। मंत्री जी के इस प्रस्ताव को सर्वसम्मति से स्वीकृत किया गया।

उड़ीसा से पधारे आर्य कुमार ज्ञानेन्द्र जी ने प्रस्ताव रखा कि सर्वोच्च न्यायालय के दिशा–निर्देश के अनुसार आर्य समाज केवल आर्य समाजियों का ही विवाह संस्कार सम्पन्न करायेगा। इस व्यवस्था का पालन करने के लिए यह आवश्यक है जो युवक–युवतियाँ आर्य समाज में विवाह सम्पन्न कराने के लिए आयें उन्हें विवाह संस्कार से एक सप्ताह पूर्व आर्य समाज की सदस्यता प्रदान की जाये तब उनका विवाह संस्कार कराया जाये।

इस अवसर पर श्री सन्त कुमार (लुधियाना), बहन इन्दू बाला, प्रेमपाल शास्त्री, श्री मामचन्द रिवाड़िया, श्री अशोक जी, श्री भूपनारायण शास्त्री (बिहार), श्री अनिल आर्य, श्री श्रीराम आर्य (कलकत्ता), श्री जयनारायण आर्य, श्री जगदीश सूर्यवंशी (महाराष्ट्र), ने अपने महत्त्वपूर्ण सुझाव तथा विचार प्रस्तुत किये। नव नियुक्त पदाधिकारियों का फूल–माला पहनाकर तथा तालियों की गड़गड़ाहट के बीच अभिनन्दन किया गया।

नव सम्वत् वर्ष एवं आर्य समाज स्थापना दिवस पर भव्य समारोह

प्रेम व करूणा का स्त्रोत वेद ज्ञान

— ओम प्रकाश आर्य

अमृतसर 7 अप्रैल, 2013। नव सम्वत् वर्ष एवं आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में महर्षि दयानन्द धाम, बाजार हंसली, अमृतसर के तत्वावधान में स्थानीय विरसा विहार गांधी ग्राउण्ड में एक शाम ऋषि के नाम भजन संध्या का आयोजन श्री ओम प्रकाश आर्य महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब की अध्यक्षता में की गई। जिसमें मुख्य अतिथि श्री अरविन्द मेहता उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब

विशेष अतिथि श्री तरसेम लाल आर्य मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब, इन्द्रपाल आर्य प्रधान आर्य समाज लक्ष्मणसर, कमल पसाहन आर्य समाज जंडियाला गुरु, प्रिं. नवीता भाटिया, धर्मवीर जी मंत्री आर्य समाज उत्तम नगर आदि पंजाब भर से आये नेतागण एवं कार्यकर्तागण विशेष रूप से उपस्थित हुए।

समारोह का शुभारम्भ मन्त्रोच्चारण से ज्योति प्रज्वलित कर किया गया। भजन संध्या कार्यक्रम में प्रसिद्ध गायिका व रचनाकार श्रीमती क्षमा पुखार (इटावा) श्री भरत कुमार (फिरोजपुर) नरेन्द्र कुमार आर्य सुलोचना आर्या, राकेश आर्या, सुनीता पसाहन, कमलेश रानी आदि ने अपने धार्मिक भजनों के साथ उपस्थित जन समूह को मंत्र मुग्ध कर दिया।

उपस्थित जन समूह को सम्बोधित करते हुए श्री ओम प्रकाश आर्य ने कहा कि – विश्व के एक सूत्र में पिरोने का साधन वेद ज्ञान की शिक्षाएँ ही हो सकती हैं। समाज से कुरीतियों, अंधविश्वासों एवं नारी अत्याचार को दूर कर स्वच्छ समाज को बनाने के लिए प्राणी मात्र में प्रेम, करूणा, सहानुभूति बढ़ाने के लिए एवं वैमनस्य मिटाने के लिए वेदों की ओर लौटने की आवश्यकता है।

उन्होंने कहा कि आज हम अपने सभ्यता व संस्कृति को भुलाते चले जा रहे हैं। पश्चिमी सभ्यता, वेशभूषा ने हमारे देश के अन्दर अपराधों व अत्याचारों को बढ़ाया है। कोर्ट–कचहरी ऐसे मुकदमों से भरे पड़े हैं। ऐसी स्थितियों से बचने के लिए हमें वेद की शिक्षाओं को अपनाना ही होगा। नैतिकता, गुरु–शिष्यों के प्रति श्रद्धा, बड़े–बुजुर्गों का मान–सम्मान आज हमारे बीच समाप्त सा हो गया है। उसे पुनः प्राप्त करने के लिए, खोई संस्कृति को वापस लाने के लिए ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन करना होगा। ऐसा ही प्रयास महर्षि दयानन्द धाम प्रत्येक महीने 'सांस्कृतिक विरासत सम्भाल' कार्यक्रम कर अपनी संस्कृति की ओर लौटने व अपने बच्चों में संस्कार डालने का प्रयत्न कर रहा है। हमारे देश की आधी जनसंख्या भूल ही चुकी है कि हमारे देश का नया साल कब प्रारम्भ होता है। लोगों के अन्दर जागृति पैदा करने के लिए ही प्रत्येक वर्ष नव सम्वत् पर एक शाम ऋषि के नाम भजन संध्या कार्यक्रम का आयोजन कर लोगों के बीच संदेश दिया जा रहा है।

डॉ. नवीन आर्य ने मंच संचालन का कार्य बड़े ही अच्छे तरीके से किया।

इस अवसर पर स्वागताध्यक्ष विजय सर्राफ, श्रीमती ममता अरोड़ा, श्री जोगिन्दर लाल लखोतरा, श्रीमती सुलोचना आर्या, श्री जुगल किशोर महाजन, श्री बलवन्त राय आहुजा, डॉ. नवीन आर्य ने मुख्य अतिथि श्री अरविन्द मेहता श्रीमती मधुर भाषिणी व विशेष अतिथियों का सम्मान स्मृति चिन्ह देकर किया गया।

कार्यक्रम संयोजक मण्डल आचार्य दयानन्द शास्त्री, विजय कुमार आर्य, राज कुमार, राकेश पसाहन, नरेन्द्र आर्य, अशोक वर्मा, डॉ. अंजू आर्या नीलम, कमलेश, रमेश शर्मा आदि ने बड़े उत्साह पूर्वक कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना योगदान दिया।

बिरसा विहार का एसी. हाल खचाखच भरा हुआ तालियों से गुंजायमान होता रहा। ऋषि दयानन्द व आर्य समाज के नारों से आकाश गुंजायमान हो गया।

अन्त में सबने उत्तम जलपान कर आनन्द उठाया तथा कार्यक्रम की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

आर्य समाज बाड़ी (रायसेन) मध्य प्रदेश का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज, बाड़ी (रायसेन) मध्य प्रदेश का वार्षिकोत्सव दिनांक 13 मार्च (बुधवार) से 17 मार्च, (रविवार) 2013 तक सोल्लास पूर्वक मनाया गया।

समारोह में सुबह शाम दोनों समय प्रतिदिन यज्ञ का आयोजन आचार्य देवेन्द्र शास्त्री, सहारनपुर के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। प्रथम दिन यज्ञोपरान्त स्वामी आर्यवेश, संयोजक, सार्वदेशिक सभा संचालन समिति तथा महामंत्री, वैदिक विरक्त मण्डल नई दिल्ली ने अपने प्रवचन में यज्ञ की मानव जीवन में उपयोगिता और सार्थकता बतलाते हुए कहा कि यज्ञ के द्वारा ही मानव जीवन की समस्त विध्न–बाधाओं को पार कर जीवन के अन्तिम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त किया जा सकता है। यज्ञ का लाभ समस्त प्राणियों को स्वतः ही प्राप्त हो जाता है क्योंकि यज्ञ से प्राण वायु उत्पन्न होकर सभी प्राणियों के शरीरों को पवित्र करती है।

सतसंगी बाबूलाल तिवारी (बाड़ी) ने भजनोपदेशों से जनता को सत्य धर्म और पाखण्ड का ज्ञान कराया।

सायंकालीन सभा में स्वामी सोम्यानन्द जी ने अपने प्रवचन में मनुष्य जीवन को सुखी बनाने के लिए योग के प्रथम दो साधनों यम और नियम का पालन आवश्यक बताया।

दूसरे दिन की प्रातःकालीन सभा में स्वामी आर्यवेश जी ने आर्य समाज के छठे नियम की व्याख्या करते हुए शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति के साधनों और कर्त्तव्यों के पालन करने पर विशेष जोर दिया।

स्वामी सर्वानन्द जी ने शारीरिक उन्नति के लिए योगासनों के महत्त्व को समझाया और स्थानीय युवक से विभिन्न आसनों का प्रदर्शन भी कराया।

समारोह में भाग लेने हेतु विशेष अतिथि के रूप में स्वामी ब्रह्मानन्द जी विदिशा, स्वामी आत्मानन्द अतरिया नरसिंहपुर, स्वामी आत्मानन्द शहडोल, मुनि लक्ष्मी नारायण भार्गव–खण्डवा, देवमुनि सुल्तानपुर, शिवमुनि पगरानी विदिशा, स्वामी रामचन्द्र यादव सतसंगी भी उपस्थित थे जिनके आगामी दिवसों में उपदेश व प्रवचन हुए।

– अरूण कुमार साहू,
महामंत्री, आर्य समाज बाड़ी, रायसेन

सम्माननीय विद्वानों तथा सुधी पाठकों की सेवा में

आत्म–निवेदन

वैदिक सार्वदेशिक समूचे विश्व के आर्यजनों के लिए लोकप्रिय एवं मार्गदर्शक पत्र है कोटि–कोटि आर्य जनता की भावनायें इस पत्र के माध्यम से प्रेरित होती है। आर्यजनों की भावनाओं को और अधिक प्रेरित और उत्साहित करने के उद्देश्य से आर्य जगत के यशस्वी विद्वानों तथा सुधी पाठकों से राष्ट्रीय सामाजिक एवं धार्मिक विचारों से ओतप्रोत विचारोत्तेजक लेख तथा अन्य सामग्री सादर आमन्त्रित है। इसके साथ ही वैदिक सार्वदेशिक आपको कैसा लगता है तथा इसको और अधिक ज्ञानवर्धक तथा प्रेरणादायी बनाने के लिए आपके सुझाव तथा प्रतिक्रिया की भी प्रतीक्षा रहेगी। कृपया अपनी प्रतिक्रिया से अवगत कराते रहें। अपने लेख सुन्दर, स्पष्ट लिखकर अथवा टाइप करवाकर ई–मेल अथवा डाक द्वारा भेजें तथा अपना पूर्ण पता अवश्य लिखें। धन्यवाद।

– सम्पादक

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की विशाल आर्य कार्यकर्ता बैठक

ग्रीष्म कालीन आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविरों की तैयारी के लिए प्रबुद्ध आर्य युवकों और आर्यजनों की एक विशाल कार्यकर्ता बैठक रविवार 21 अप्रैल, 2013 दोपहर 3 बजे सार्वदेशिक सभा कार्यालय ''दयानन्द भवन'' 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 में होगी। सभी साथी समय पर पधारने की कृपा करें।

– डॉ. अनिल आर्य, राष्ट्रीय अध्यक्ष, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, दिल्ली

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें

NDPSo on 19/20 अप्रैल, 2013 — वैदिक सार्वदेशिक 18 से 24 अप्रैल, 2013

पंजीयन संख्या *DELMUL/2005/15488*
डाक पंजीकरण संख्या *DL(c)-01/1213/12-14*

प्रकाशन की तिथि : 18 अप्रैल, 2013

Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2012-14]

वेदाः
ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

धन का सदुपयोग

प्रतिष्ठा में:–

अवितरण की दशा में लौटाएँ–
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन,
(रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002

पृणीयादिन्नाधमानाय तव्यान् द्रीघीयांसमनु पश्येत पन्थाम्।
ओ हि वर्तन्ते रथ्येव चक्रान्यमन्यमुप तिष्ठन्त रायः।।

—ऋ० १०/१६१/२

ऋषिः—संवननः।। देवता—संज्ञानम्।। छन्दः—अनुष्टुप्।।

विनय—धन को जाते हुए कितनी देर लगती है?व्यापार में घाटा हो जाता है, चोर—लुटेरे धन लूट ले जाते हैं, बैंक टूट जाते हैं, घर जल जाता है आदि सैकड़ों प्रकार से लक्ष्मी मनुष्य को क्षणभर में छोड़कर चली जाती है। वास्तव में लक्ष्मीदेवी बड़ी चंचल है। वह मनुष्य कितना मूर्ख है जो यह समझता है कि बस, यदि में दूसरों को धन दान नहीं करूंगा तो और किसी प्रकार मेरा धन मुझसे पृथक् नहीं हो सकेगा। अरे, धन तो जब समय आएगा तो एक पलभर में तुझे कंगाल बनाकर कहीं चला जाएगा। इसलिए हे धनी पुरुष! यदि इस समय तेरे शुभकर्मों के भोग से तेरे पास धन—सम्पत्ति आई हुई है तो तू इसे यथोचित—दान में देने में कभी संकोच मत कर। जीवन—मार्ग को तनिक विस्तृत दृष्टि से देख और सत्पात्र को दान देने में अपना कल्याण समझ, अपनी कमाई समझ। सच्चा दान करना, सचमुच जगत्पति भगवान् को उधार देना है जो बड़े भारी दिव्य सूद के साथ फिर वापस मिलता है। जो जितना त्याग करता है वह उससे न जाने कितना गुणा अधिक प्रतिफल पाता है; यह ईश्वरीय नियम है। दान तो संसार का महान् सिद्धान्त है, पर इस इतनी साफ बात को यदि लोग नहीं समझते हैं तो इसका कारण यह है कि वे मार्ग को दूर तक नहीं देखते। जीवन—मार्ग कितना लम्बा है, यह संसार कितना विस्तृत है और इस संसार में जीवों को उनके कब के शुभ—अशुभ कर्मों का फल उन्हें कब मिलता है, यह सब—कुछ नहीं दिखाई देता। इसीलिए हमें संसार में चलते हुए वे अटल नियम भी दिखाई नहीं देते जिनके अनुसार सब मनुष्यों को उनके शुभ—अशुभ कर्मों का फल अवश्यमेव भोगना पड़ता है। यदि इस संसार की गति को हम तनिक भी ध्यान से देखें तो पता लगेगा कि धन—सम्पत्ति इतनी अस्थिर है कि यह रथचक्र की भाँति घूमती फिरती है— आज इसके पास है तो कल दूसरे के पास है, परन्तु हम अति क्षुद्र दृष्टिवाले हैं और इसलिए इस 'आज' में ही इतने ग्रस्त हैं कि हम 'कल' को देखते हुए भी नहीं देखते हैं। संसार में लोगों को नित्य धननाश होता हुआ देखते हुए भी अपने धननाश के एक पल पहले तक भी हम इस घटना के लिए कभी तैयार नहीं होते और इसीलिए तनिक—सा धननाश होने पर इतने रोते—चीखते भी हैं। यदि हम मार्ग को विस्तृत दृष्टि से देखें तो इन धनागमों और धननाशों को अत्यन्त तुच्छ बात समझें। यदि संसार में प्रतिक्षण चलायमान, घूमते हुए, इस धन—चक्र को देखें, इस बहते हुए धनप्रवाह को देखें, तो हमें धन जमा करने का तनिक भी मोह न रहे।

शब्दार्थ—तव्यान्=धन से बढ़े हुए समृद्ध पुरुष को चाहिए कि वह **नाधमानाय**=माँगने वाले सत्पात्र को **पृणीयात् इत्**=दान देवे ही; **पन्थाम्**=सुकृत मार्ग को **द्राघीयांसम्**=दीर्घतम **अनुपश्येत**=देखे। इस लम्बे मार्ग में **रायः**=धन सम्पत्तियाँ **उ हि**=निश्चय से **रथ्याः चक्राः इव**=रथ—चक्रों की भाँति **आ वर्तन्ते**=ऊपर—नीचे घूमती रहती हैं बदलती रहती हैं और **अन्यं अन्यं उपतिष्ठन्ते**=एक को छोड़कर दूसरे के पास जाती रहती है।

सभार- 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी ओ३म् हरिद्वार

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर—घर में मिले रोगों से निदान

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायेरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे,
मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक,
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक
दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ट
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार
डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी - 249404 जिला - हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन - 01334-246073

प्रो० कैलाशनाथ सिंह, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा सक्सेना आर्ट प्रिंटर्स : सैड-26 ओखला फेस-1, नई दिल्ली-110020 से प्रकाशित एवं मुद्रित।
(फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216) सम्पा. : प्रो० कैलाशनाथ सिंह (सभा मन्त्री) मो.:0.9415017934
ई-मेल : *Sarvadeshik@yahoo.co.in* वैबसाइट : *www.vedicaryasamaj.com*

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।